ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-12* March-2021
Anthology : The Research

बीसवीं शताब्दी के पूर्व कानपुर की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

Cultural Background of Kanpur Before Twentieth Century

Paper Submission: 15/03/2021, Date of Acceptance: 22/03/2021, Date of Publication: 23/03/2021

अमित सिंह
विभागाध्यक्ष,
संगीत विभाग,
यूनाईटेड पब्लिक स्कूल,
सिविल लाइन्स, कानपुर,
उ०प्र०, भारत

सारांश

1857 तक बिठूर के पेशवा दरबार में संगीत के आयोजन की पुष्टि होती हैा लेकिन यह क्रम टूटता है क्योंकि 1857 की क्रांति में सब अस्त–व्यस्त हो गया। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में संगीत को कानपुर के देवालयों में प्रतिष्ठा प्राप्त हुई इस दौरान कानपुर एवं कानपुर के बाहर से आने वाले कलाकारों द्वारा संगीत की पुनर्स्थापना के प्रयास होने लगे। इसके फलस्वरूप संगीत समाज में प्रतिष्ठित होने लगा। विद्यालयी शिक्षा में भी संगीत विषय के रूप में पढ़ाया जाने लगा।

Till 1857, there is confirmation of the music being organized in the Peshwa Durbar of Bithoor, but this order breaks because everything got disturbed in the revolution of 1857. In the late 19th century, music gained prominence in the temples of Kanpur, during which efforts were made to restore the music by artists from outside Kanpur and Kanpur. As a result, music began to be revered in the society. Music was also taught as a subject in school education.

मुख्य शब्द : सांस्कृतिक, कानपुर, संगीत, पृष्ठभूमि, पुनर्स्थापना, घनिष्ठ।
Cultural, Kanpur, Music, Backgrounds, Restoration, Intimate.

प्रस्तावना

सन् 1857 तक संगीत के गौरव मय अतीत का बिठूर के पेशवा दरबार से घनिष्ठ सम्बन्ध था। दरबार के आये दिन के उत्सव, पर्व और आयोजनों में संगीतविदों का सम्मिलित होते रहना साधारण बात थी। राज परिवार में संगीतज्ञों का आदर सम्मान होता रहता था। किन्तु 1857 के साथ समय ने करवट ली। बिठूर से पेशवा दरबार की प्रभुता समाप्त होते ही संगीत और संगीतज्ञ राज्याश्रय से रहित हो गये। ऐसे समय में कला का विकास रुक जाना स्वाभाविक ही था। 1857 की क्रान्ति का उतार सब कुछ अस्त व्यस्त, बिखरे पड़े लोग, साधन, परम्परायें और हमारा इतिहास। नदी में आई बाढ़ के बाद की सी स्थिति सारे कानपुर जनपद की थी। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी मारे जा चुके थे। उनके परिवार वाले शहर बाहर थे या फांसी चढ़ाये जा चुके थे। आशय यह है कि सबको अपनी अपनी पड़ी थी। कौन किसे पूछे? घटनाक्रम तेजी से बदल रहा था। सभी कुछ राम आसरे था। इस तबाही में बहुत कुछ नष्ट हो चुका था। थोड़ा बहुत बचा हुआ लोक किवंदंतिया (लोगों के मुंह की कच्ची पक्की बाते) ही इतिहास का आकार मान ली गयी। संगीत की ऐतिहासिक स्मृतियां भी इस विपदा के नीचे दबी पड़ी लगभग दो दशाब्दियों तक मरणासन्न स्थिति में कुलबुलाती रही।

लगभग दो दशकों तक संगीत का ऐतिहासिक क्रम इन्हीं उतार चढ़ावों के बीच झूलता रहा। धीरे–धीरे उड़ी हुई धूल छटने के साथ समाज की दृष्टि भी साफ होती गयी। समाज की प्रबुद्ध दृष्टि ने अवशेषों को ही समेटना संजोना प्रारम्भ किया। संगीत हमारी परम्परा के साथ जुड़ने लगा। संगीत के स्वर हमारी आराधना के आधार बनने लगे। मंदिरों के भक्तिमय वातावरण में स्वर लहरी गूंजने लगी। 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में संगीत को कानपुर के देवालयों में प्रतिष्ठा प्राप्त होने लगी। संतप्त मन और लड़खड़ाते कदमों को साधने में संगीत ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। नगर के मंदिरों में कुछ प्रमुख हुलासी लाल, रामदयाल, अवध बिहारी का मन्दिर, बद्री केदार का मंदिर, छेदी लाल का मंदिर (कछियाना) हैं। यहॉ झॉकियों में नाटक, स्वांग आदि भी होते थे। जिनमें कलाकारों को आमंत्रित किया जाता था।

इस अवधि में ध्रुपद गायकी के संदर्भ में कानपुर जनपद में पं0 चिन्तामणि मिश्र(सं01820) और पुत्तु पाण्डेय (सं01870) का नाम याद किया जाता है। सं0 (1901) में फर्रुखाबाद जनपद के श्री ललन पियाका नाम भी काफी विख्यात है जिनकी गायी हुई ठुमरी कलाकारों और कलाविदों के बीच बहुत प्रचलित थी। सं01918 में नारायण दर्जी के द्वारा कानपुर नगर में संस्थापित ठाकुर अवध बिहारी ट्रस्ट के तत्वावधान में संगीत के आयोजन का प्रारम्भ हुआ। सन् 1916 में ग्वालियर के श्री सोनू भावे कानपुर नगर में आये। इन्होनें अपना निवास गया प्रसाद लेन में स्थित श्री छोटे लाल गया प्रसाद धर्मशाला के पास प्राप्त किया। इनके प्रयास से भी नगर में शास्त्रीय संगीत के सम्बन्ध में कुछ चेतना आई। लगभग उसी समय श्री नानू भैया (गुरुजी) सं0 1916 में कानपुर पधारे। गुरु जी का पहला कार्यक्रम कानपुर जनपद के नौबस्ता क्षेत्र में आयोजित हुआ। कानपुर में स्थायी निवास करने वाले ये लोग पहले संगीतज्ञ थे।

सं0 1918 में ही ठा0 जयदेव सिंह कानपुर आये। यहीं उनकी श्री नानू भईया तैलंग से पहली भेंट हुई ।

नगर के संगीत के विकास क्रम के साथ ही ठाकुर जयदेव सिंह का नाम सदा श्रद्धापूर्वक याद किया जाता रहेगा। लोंगेा में संगीत के प्रति अनुराग बढ़ाने में ठाकुर साहब की बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अथक परिश्रम और अनोखी सूझबूझ के कारण ठाकुर साहब, श्री कृष्ण विनायक फड़के,राय साहब गोपीनाथ मेहरोत्रा लाला छंगामल और श्री डी0 पी0 खत्री आदि के सहयोग से एक ऐसे दल का गठन कर सके जो आगे चलकर कानपुर नगर के सांगीतिक विकास का आधार बना। इन सम्मिलित उपक्रमों से नगर निरन्तर सांगीतिक विकास की ओर अग्रसर हो रहा थ। कानपुर नगर को संगीत के इतिहास की दृष्टि से 1920 से 1930 तक की अवधि महत्वपूर्ण रही है। वर्ष 1924 में लखनऊ में श्री विष्णु नारायण भातखण्डे के आगमन का कानपुर की सांगीतिक चेतना पर अद्भूत प्रभाव पड़ा। ठाकुर जयदेव सिंह जैसे सजग पर्यवेक्षक और संगठक की उपस्थिति के कारण नगर का सम्भ्रान्त वर्ग सतत रुप से संगीतोन्मुखी हो रहा था। नगर के कला–रसिकों में अनेक नामों का उल्लेख किया जा सकता है जिनका संगीत से गहरा लगाव था। ''शेरा बाबू'' एक ऐसा नाम था जो संगीतज्ञ न होते हुये भी संगीतानुरागी थें। सुना जाता है कि वे तबले का बायां इतने सुन्दर ढंग से बजाते थे कि अच्छे–अच्छे कलाकार तक सम्मोहित हो जाते थे। चौक मोहल्ले में बसने वाले बड़े समृद्ध गौड़ परिवार के सदस्य श्री रामनाथ जी भी बड़े संगीतानुरागी थे। काफी समय तक श्री नानू भैया तैलंग जी से उन्होंने संगीत शिक्षा प्राप्त की थी। उस समय के संगीत रसिकों में उल्लेखनीय नाम इस प्रकार है– संर्वश्री लाला बिहारीलाल, लाला छंगामल, मनीराम कपूर, रायसाहब गोपी नाथ मेहरोत्रा आदि है। इनके प्रयासों से संगीत के कार्यक्रम नगर में प्रायः होते ही रहते थे। मनीराम की बगिया और दिब्बन बाबू की बगिया नगर के संगीतानुरागियों के लिये आकर्षण का केन्द्र थे। लोगों की कलाप्रियता के कारण यहॉ आने वाले कलाकारों को सम्मान और साधन दोनों ही प्राप्त होते थे। बाहर से आये कलाकार महीनों बने रहकर नगर निवासियों की संगीत रस पिपासा शांत करते थे।

दिसम्बर सं0– 1925 में अखिल भारतीय कांग्रेस के अधिवेशन में स्व0 पं0 विष्णु दिगम्बर पलुस्कर का कानपुर में आगमन हुआ। यद्यपि नगर में सांस्कृतिक चेतना आ चुकी थी, फिर भी पलुस्कर जी नवीन संगीत चेतना के वाहक बनकर 1929–30 में पुनः कानपुर पधारे। मेस्टन रोड स्थित भवन सेक्शन में पलुस्कर जी के भजनों का कार्यक्रम उनके प्रवास काल पर नियमित रुप से होता रहा, जिसका नगर निवासियों पर अद्भूत प्रभाव अनुभव किया गया। सन् 1925 ई0 में काग्रेस के अधिवेशन में उनके साथ आयी शिष्य मंडली (जो वालयंटियर कहलाते थे) भी आयी थी। जब पलुस्कर जी वापस लाने लगे तो श्री डी0पी0 खत्री एवं श्री सबनीस आदि संगीत प्रेमियों के अनुरोध पर नगर में संगीत प्रचार कार्य के लिये उन्होंने अपना एक शिष्य प्रदान किया। उनके वही शिष्य शंकर श्री बोडस को जीवन पर्यन्त नगर में अपनी संगीत सेवाओं के द्वारा पहचाना गया।

सं0–1928 में नगर में व्याप्त सांस्कृति अभिरुचियों के संयोजन के लिये ठाकुर जयदेव सिंह के सद्प्रयासों के फलस्वरुप संगीत समाज की स्थापना हुई। यही वह संस्था हैं जिसमें सं0 1943 तक बड़े बड़े संगीत आयोजनों को संचालित कर धूम मचा दी। उस समय के आयोजित इन कार्यक्रमों में से कई कार्यक्रम आकार प्रकार की दृष्टि से इतने बड़े होते थे कि आज के समय में अनेक दृष्टिकोणों से इनकी परिकल्पना कर पाना भी कठिन है। संगीत समाज की प्रथम सभा नगर के मनीराम बगिया स्थित प्रिसिंपल श्री हीरालाल जी खन्ना के घर पर हुई। संगीत समाज के तत्वावधान में सं0–1936 में क्रमशः दो संगीत विद्यालयों की स्थापना की गई। नगर म्यूनिसिपलिटी से रु0 25/– का अनुदान भी मिलता था, जो लगभग 1936 तक गुरु नारायण खत्री स्कूल और मारवाड़ी विघालय में संचालित रहीं। गुरु नारायण खत्री स्कूल की संगीत कक्षाएं स्व0 श्री नानू भईया तैलंग के प्रशिक्षण में संचालित होती रहीं। सं0–1930 में नगर में श्री नारायण महादेव जोशी जिन्हें बलुवा जोशी के नाम से जाना जाता था, का पर्दापण हुआ। नगर ने श्री जोशी के रुप में एक अतिरिक्त प्रतिभासम्पन्न कलाकार और शिक्षक प्राप्त किया। आपके बारे में कहा जाता हैं कि आपने पार्श्व गायिका लतामंगेशकर को संगीत के प्रारम्भिक स्वरों का अभ्यास कराया था। इनके साथ ही एक अन्य कलाकार पलुस्कर जी के शिष्य श्री शेषगिरि जोशी का भी उल्लेख आता है। इन्होंने कुछ समय तक प्रारम्भ में श्रीमती शांता बोड्स को संगीत प्रशिक्षण दिया था।

सं0–1943 के पश्चात् सांगीतिक विकास के इतिहास के आधारों में व्यापक परिवर्तन अनुभव किये गये। निरन्तर किये गये प्रयासों के कारण संगीत के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में अपेक्षित परिष्करण हुआ। आयोजनों के माध्यम से संगीत को एक प्रतिष्ठापूर्ण स्थान प्राप्त हो चुका था। किन्तु विकास के क्रम में निरन्तरता बनाये रखने के लिये यह कोई संतोषजनक स्थिति नहीं थी। संगीत के क्षेत्र में शोध की दृष्टि से नये प्रयोगों की

दृष्टि से और जीवन के अन्यान्य प्रसंगों तक संगीत को पहुँचाने के विचार से अभी स्थिति बहुत पिछड़ी हुई थी।

वादन और नृत्य की विद्या का अब भी समुचित विकास नहीं हो पा रहा था। इसलिये संगीत की मशाल को और आगे ले जाने वाले हाथों में कुछ नये हाथ और जुड़े । नये नये प्रकार से इस विकासक्रम में योगदान करने का कार्य जारी रहा। इस अवधि में सक्रिय योगदान प्रदान करने वाले लोगों में सर्वश्री पं0 लालमणि मिश्र, वी0आर0 पुरंदरे, बिन्देश्वरी प्रसाद मिश्र, वृन्दावन पाठक, गयाप्रसाद कपूर, भीष्मदेव बेदी, कौशल जी, कृष्ण नारायण तैलंग, गुलाम साबिर, रामदास पाठक आदि अनेक संगीतज्ञ थे। इसमें पं0 लालमणि मिश्र का नाम विशेष रुप से लिया जाता हैं क्योंकि ठा0 जयदेव सिंह के जाने के पश्चात् नगर की सांगीतिक गतिविधियों की शून्यता के सभी प्रकार से पूर्ण करने में उन्होंने अभूतपूर्व योगदान किया। पॉचवे दशक में आचार्य वृहस्पति ने कानपुर में निवास बनाया। इससे संगीत जगत को नवचेतना मिली, साथ ही नगर को एक प्रकाण्ड विद्वान का लाभ मिला।

अध्ययन के उद्देश्य

कानपुर में संगीत की क्या पृष्ठभूमि रही है यह पता लगाने के उपरांत संगीत के भावी स्वरूप की योजना बनाई जा सकती है।

निष्कर्ष

कानपुर की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि काफी उर्वरा दिखाई पड़ती है अतः यह कहा जा सकता है कि संगीत जिन संगीतज्ञो, संगीत शिक्षकों एवं संगीत रसिको ने कानपुर के संगीत के विकास में योगदान दिया उसे निरंतर गति प्रदान की जा सकती है और वर्तमान समय में यह परिलक्षित भी हो रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अ0 भा0 गान्धर्व महाविद्यालय मण्डल, बम्बई के 14 वें त्रैवार्षिक संगीत शिक्षक सम्मेलन की पत्रिका (वर्ष 1989) पृष्ठ सं0–37*
2. *ठाकुर अवध बिहारी मंदिर ट्रस्ट कानपुर के 64 वें अधिवेशन की पत्रिका सन् 1956 (प्राक्कथन) पृष्ठ संख्या – 2*
3. *अ0 भा0 गान्धर्व महाविद्यालय मण्डल, बम्बई के 14 वें त्रैवार्षिक संगीत शिक्षक सम्मेलन की पत्रिका (वर्ष 1989) पृष्ठ सं0–38*
4. *अ0 भा0 गान्धर्व महाविद्यालय मण्डल, बम्बई के 14 वें त्रैवार्षिक संगीत शिक्षक सम्मेलन की पत्रिका (वर्ष 1989) पृष्ठ सं0–39*
5. *अ0 भा0 गान्धर्व महाविद्यालय मण्डल, बम्बई के 14 वें त्रैवार्षिक संगीत शिक्षक सम्मेलन की पत्रिका (वर्ष 1989) पृष्ठ सं0–40*
6. *अ0 भा0 गान्धर्व महाविद्यालय मण्डल, बम्बई के 14 वें त्रैवार्षिक संगीत शिक्षक सम्मेलन की पत्रिका (वर्ष 1989) पृष्ठ सं0–41*